Gommatsara Karmakand

Verse 1 (गाथा १)

Prakrit: पणमिय सिरसा णेमिं गुणरयणविभूसणं महावीरं । सम्मत्तरयणणिलयं पयडिससुकित्तणं वोच्छं ॥ १ ॥ **Sanskrit Chaya:**प्रणम्य शिरसा नेमिं गुणरत्नविभूषणं महावीरम् । सम्यक्त्वरत्ननिलयं प्रकृतिसमुत्कीर्तनं वक्ष्यामि ॥ १ ॥

- **Pure Hindi Translation:** ज्ञानादि आत्मिक गुणों रूपी रत्नों के आभूषणों से सुशोभित, मोक्ष रूपी महालक्ष्मी को प्रदान करने वाले तथा सम्यक्त्व (सच्चे श्रद्धान) रूपी रत्न के निवास स्थान, ऐसे श्री नेमिनाथ तीर्थंकर (एवं महावीर स्वामी) को मस्तक झुकाकर नमस्कार करके, मैं (आचार्य नेमिचन्द्र) कर्मों की मूल और उत्तर प्रकृतियों का निरूपण करने वाले 'प्रकृतिसमुत्कीर्तन' नामक प्रथम अधिकार को कहता हूँ।
- **English Translation:** Having bowed my head in reverence to Lord Neminatha (and Lord Mahavira), who is adorned with the jewels of divine attributes, who is the giver of the great wealth of liberation, and who is the abode of the jewel of right belief (*Samyaktva*), I (Acharya Nemicandra) shall now expound the first chapter titled *Prakriti-Samutkirtana* (The Exposition of the Nature of Karmas), detailing both the primary and secondary natures of karmas.

Verse 2 (गाथा २)

Prakrit: पयडी सील सहावो जीवंगाणं अणाइसंबंधो । कणयोवले मलं वा ताणत्थित्तं सयं सिद्धं ॥ २ ॥ **Sanskrit Chaya:** प्रकृतिः शीलं स्वभावः जीवाङ्गयोरनादिसम्बन्धः । कनकोपले मलं वा तयोरस्तित्वं स्वयं सिद्धम् ॥ २ ॥

- **Pure Hindi Translation:** किसी बाह्य कारण के बिना वस्तु का जो सहज स्वभाव होता है, उसे ही 'प्रकृति', 'शील' या 'स्वभाव' कहा जाता है। जीव का स्वभाव कषाय रूप परिणमित होने का है और कर्म का स्वभाव जीव को कषाय रूप परिणमित कराने का है। इन दोनों (जीव और कर्म) का संबंध अनादिकाल से वैसे ही है जैसे स्वर्ण-पाषाण में सुवर्ण और मैल का संबंध होता है। इन दोनों का अस्तित्व (संसार में) स्वयं सिद्ध और प्रत्यक्ष अनुभवगोचर है।
- **English Translation:** That which constitutes the inherent nature of a substance without any external cause is termed as *Prakriti* (nature), *Shila* (disposition), or *Svabhava* (inherent attribute). The soul's nature is to transform into a state of passions (*Kashayas*), while the karma's nature is to induce those passions. The association between the soul and karma is beginningless (*Anadi*), much like the natural coexistence of pure gold and dirt within unrefined gold ore. The independent existence of both is self-evident through direct experience.

Verse 3 (गाथा ३)

Prakrit: देहोदयेण सहिओ जीवो आहरदि कम्म णोकम्मं । पडिसमयं सबंगं तत्तायसपिंडओव जलं ॥ ३ ॥ **Sanskrit Chaya:**देहोदयेन सहितो जीव आहति कर्म नोकर्म । प्रतिसमयं सर्वाङ्गं तप्तायः पिंडमिव जलम् ॥ ३ ॥

- **Pure Hindi Translation:** औदारिक आदि शरीरों के उदय से युक्त यह संसारी जीव, मन, वचन और काय के योगों (प्रवृत्ति) के कारण, प्रतिसमय (हर क्षण) अपने समस्त आत्म-प्रदेशों द्वारा चारों ओर से कर्म-वर्गणाओं तथा नोकर्म-वर्गणाओं को ग्रहण करता है; ठीक उसी प्रकार जैसे अग्नि में तपाया हुआ लोहे का गर्म गोला पानी को सब ओर से अपनी ओर खींच लेता है।
- **English Translation:** This worldly soul, possessed of a physical body (due to the maturation of body-forming karmas), continuously attracts and absorbs karma particles (*Karma-varganas*) and quasi-karma particles (*Nokarma-varganas*) through all its space-points (*Atma-pradeshas*) at every single moment due to the activity of mind, speech, and body. This process is identical to how a red-hot iron ball absorbs water from all directions.

Verse 4 (गाथा ४)

- **Prakrit:** सिद्धाणंतिमभागं अभवसिद्धादणंतगुणमेव । समयपवद्धं बंधदि जोगवसादो दु विसरित्थं ॥ ४ ॥
- **Pure Hindi:** यह आत्मा मन-वचन-काय के योगों के माध्यम से प्रतिसमय सिद्ध जीवराशि के अनंतवें भाग और अभव्य जीवराशि से अनंतगुने पुद्गल परमाणुओं के समूह (समयप्रबद्ध) को बांधता है। परंतु, योगों की मंदता और तीव्रता के कारण कभी कम तो कभी अधिक संख्या में परमाणुओं को ग्रहण करता है।
- **English:** Through the vibrational activity of mind, speech, and body, the soul binds at every moment a collective unit of matter (*Samayaprabaddha*) equivalent to an infinitesimal fraction of the infinite liberated souls (*Siddhas*) and infinitely more than the total number of non-liberable souls (*Abhavya-siddhas*). The exact volume varies depending on the intensity of the soul's cosmic vibrations.

Verse 5 (गाथा ५)

- **Prakrit:** जीरदि समयपबद्धं पओगदो णेगसमयबद्धं वा । गुणहाणीण दिवड्ढं समयपबद्धं हवे सत्तं ॥ ५ ॥
- **Pure Hindi:** समय-समय पर कर्म परमाणु एक-एक समयप्रबद्ध के रूप में अपना फल देकर स्वयं झड़ (खिर) जाते हैं, अथवा तपस्या रूप विशेष पुरुषार्थ से एक साथ अनेक समयप्रबद्ध भी नष्ट हो जाते हैं। वर्तमान सत्ता (मौजूदगी) में लगभग डेढ़ गुणहानि आयाम से गुणा किया हुआ समयप्रबद्ध संचित रहता है।
- **English:** At every single moment, one accumulated unit of bound karma naturally sheds (*Nirjara*) after bearing its fruit, though intensive spiritual austerities can prematurely eliminate multiple units simultaneously. The total residue currently stored in the soul's spiritual account (*Sattva*) equals approximately one-and-a-half times the *Gunahani*dimension multiplied by a single unit.

Verse 6 (गाथा ६)

- **Prakrit:** कम्मत्तणेण एक्कं दवं भावोत्ति होदि दुविहं तु । पोग्गलपिंडो दवं तस्सत्ती भावकम्मं तु ॥ ६ ॥
- **Pure Hindi:** कर्मत्व (बाँधने के सामान्य लक्षण) की अपेक्षा से कर्म मूलतः एक प्रकार का है, परंतु द्रव्य और भाव के भेद से वह दो प्रकार का हो जाता है। पुद्गल परमाणुओं का समूह 'द्रव्यकर्म' है, और उस द्रव्य पिंड में फल देने की जो आंतरिक शक्ति है, वह 'भावकर्म' है।
- **English:** From the generic perspective of binding, karma is singular, but it is divided into two dimensions: material (*Dravya*) and dispositional (*Bhava*). The physical mass of

clustered matter is the material karma, whereas the intrinsic potency to yield fruits within that physical mass constitutes dispositional karma.

Verse 7 (गाथा ७)

- **Prakrit:** तं पुण अट्ठविहं वा अडदालसयं असंखलोगं वा । ताण पुण घादित्ति अ-घादित्ति य होंति सण्णाओ ॥ ७ ॥
- **Pure Hindi:** वह सामान्य कर्म (उत्तर भेदों की विवक्षा से) आठ प्रकार का, अथवा एक सौ अड़तालीस (१४८) प्रकार का, अथवा असंख्यात लोकप्रमाण भेदों वाला होता है। उन सामान्य कर्मों की मुख्य रूप से दो संज्ञाएँ हैं—घाति कर्म और अघाति कर्म।
- **English:** That generic karma is further classified into 8 primary types, 148 secondary configurations, or up to uncountable variations corresponding to the space-points of the universe. These variations are broadly categorized under two operational titles: Destructive (*Ghati*) and Non-destructive (*Aghati*) karmas.

Verse 8 (गाथा ८)

- **Prakrit:** णाणस्स दंसणस्स य आवरणं वेयणीयमोहणियं । आउगणामं गोदंतरायमिदि अट्ठ पयडीओ ॥ ८ ॥
- **Pure Hindi:** ज्ञान का आवरण (ज्ञानावरण), दर्शन का आवरण (दर्शनावरण), वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय—ये कर्मों की आठ मूल प्रकृतियाँ (मूल स्वभाव) हैं।
- **English:** Knowledge-obscuring (*Jnanavarana*), Perception-obscuring (*Darshanavarana*), Feeling-producing (*Vedaniya*), Deluding (*Mohaniya*), Life-span-determining (*Ayu*), Body-making (*Nama*), Status-determining (*Gotra*), and Obstructing (*Antaraya*)—these are the eight fundamental core types of karmas.

Verse 9 (गाथा ९)

- **Prakrit:** आवरणमोहविग्घं घादी जी-वगुणघादणत्तादो । आउगणामं गोदं वेयणियं तह अघादित्ति ॥ ९ ॥
- **Pure Hindi:** ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय—ये चार घाति कर्म हैं क्योंकि ये आत्मा के अनुजीवी (मूल) गुणों का घात करते हैं। आयु, नाम, गोत्र और वेदनीय—ये चार अघाति कर्म हैं, क्योंकि इनके रहने से आत्मा के आत्मिक गुणों का मूल नाश नहीं होता।
- **English:** The two obscuring karmas, the deluding karma, and the obstructing karma are classified as destructive (*Ghati*) because they directly impair the intrinsic, co-existent attributes of the soul. Conversely, the life-span, body-making, status-determining, and feeling-producing karmas are non-destructive (*Aghati*) as they do not destroy core spiritual attributes.

Verse 10 (गाथा १०)

- **Prakrit:** केवलणाणं दंसणमणंतविरियं च खयियसम्मं च । खयियगुणे मदियादी खओवसमिए य घादी दु ॥ १० ॥
- **Pure Hindi:** घाति कर्म आत्मा के केवलज्ञान, केवलदर्शन, अनंतवीर्य और क्षायिक सम्यक्त्व जैसे दिव्य क्षायिक गुणों को प्रकट नहीं होने देते, तथा मतिज्ञान आदि क्षायोपशमिक भावों को भी आवृत (विकृत) करते हैं।
- **English:** The destructive karmas impede the manifestation of the soul's pure, destroyed-state attributes, such as infinite knowledge, infinite perception, infinite energy,

and perfect right belief, while concurrently clouding the partial, mixed-state intellectual faculties like sensory and scriptural knowledge.

Verse 11 (गाथा ११)

- **Prakrit:** कम्मकयमोहवड्डियसंसारम्हि य अणादिजुत्तम्हि । जीवस्स अवट्ठाणं करेदि आऊ हलिव णरं ॥ ११ ॥
- **Pure Hindi:** अज्ञान, असंयम और मिथ्यात्व जन्य मोह से बढ़े हुए इस अनादि संसार चक्र में, आयुकर्म संसारी जीव को मनुष्यादि चार गतियों में एक निश्चित काल तक वैसे ही रोके रखता है जैसे लकड़ी का यंत्र (काठ का खोड़ा/बंदीगृह) अपराधी के पैरों को बांधकर एक स्थान पर रोके रखता है।
- **English:** Within the beginningless cycle of transmigrations, expanded by the delusion of ignorance and cosmic attachment, the life-span karma detains a worldly soul inside a specific destination (celestial, human, animal, or hellish) for a fixed duration, operating exactly like wooden shackles that confine a prisoner to a cell.

Verse 12 (गाथा १२)

- **Prakrit:** गदिआदि जीवभेदं देहादी पोग्गलाण भेदं च । गदियंतरपरिणमनं करेदि णामं अणेयविहं ॥ १२ ॥
- **Pure Hindi:** अनेक भेदों वाला नामकर्म एक चतुर चित्रकार की तरह संसारी जीव के लिए नारकी-मनुष्यादि पर्यायों के जीव-भेदों को, औदारिक आदि शरीरों के पुद्गल-भेदों को तथा एक गति से दूसरी गति रूप विलक्षण परिणमनों की रचना करता है।
- **English:** Acting like a master painter, the diverse body-making karma structures the varying classes of living beings across different realms, fashions the physical configurations of material bodies, and orchestrates the transition and transformation of the soul from one realm of existence to another.

Verse 13 (गाथा १३)

- **Prakrit:** संताणकमेणागयजीवायरणस्स गोदमिदि सण्णा । उच्चं णीचं चरणं उच्चं णीचं हवे गोदं ॥ १३ ॥
- **Pure Hindi:** कुल की परंपरा और वंशानुक्रम से प्राप्त जीव के सामाजिक आचरण एवं संस्कारों को 'गोत्र' कहते हैं। यदि कुल परंपरा में उत्तम आचरण हो तो उसे 'उच्च गोत्र' कहा जाता है, और यदि लोक-निंदित आचरण का संस्कार हो तो वह 'नीच गोत्र' कहलाता है।
- **English:** The social conduct, lineage traits, and moral tendencies inherited through familial succession are termed *Gotra*. When this ancestral lineage reflects high moral conduct and social honor, it is high-status karma; if it produces low moral conduct or societal degradation, it is low-status karma.

Verse 14 (गाथा १४)

- **Prakrit:** अक्खाणं अणुभवणं वेयणियं सुहसरूवयं सादं । दुक्खसरूवमसादं तं वेदयदीदि वेदणियं ॥ १४ ॥
- **Pure Hindi:** इंद्रियों के माध्यम से अनुकूल या प्रतिकूल विषयों का अनुभव कराना वेदनीय कर्म है। इसमें सुख रूप साता का अनुभव कराना 'साता वेदनीय' है और दुःख रूप असाता का अनुभव कराना 'असाता वेदनीय' कर्म है। जो इसका वेदन (अनुभव) कराए, वह वेदनीय कर्म है।
- **English:** The karma that facilitates sensory experiencing is feeling-producing karma. Inducing an experience of agreeable pleasure is pleasant-feeling karma, while generating the experience of disagreeable misery is unpleasant-feeling karma. That which forces this experiencing upon the soul is the *Vedaniya* karma.

Verse 15 (गाथा १५)

- **Prakrit:** अत्थं देक्खिय जाणदि पच्छा सहहदि सत्तभंगीहिं । इदि दंसणं च णाणं सम्मत्तं होंति जीवगुणा ॥ १५ ॥
- **Pure Hindi:** संसारी जीव पहले सामान्य पदार्थ को देखता (दर्शन) है, फिर उसे विशेष रूप से जानता (ज्ञान) है, और उसके पश्चात् अनेकांत शैली (सप्तभंगी नय) से उस पर सच्चा विश्वास (सम्यक्त्व) करता है; इस प्रकार देखना दर्शन है, जानना ज्ञान है और श्रद्धान करना सम्यक्त्व है—ये सब जीव के मूल गुण हैं।
- **English:** A worldly soul initially perceives an object generally (perception), then analyzes it specifically (knowledge), and subsequently establishes firm conviction in its reality using the sevenfold framework of conditional predication (right belief). Thus, general awareness is perception, analytical understanding is knowledge, and absolute conviction is right belief—all being intrinsic qualities of the soul.

Verse 16 (गाथा १६)

- **Prakrit:** अब्भरहिदादु पुव्वं णाणं तत्तो हि दंसणं होदि । सम्मत्तमदो विरियं जीवाजीवगदमिदि चरिमे ॥ १६ ॥
- **Pure Hindi:** आत्मा के सभी गुणों में ज्ञानगुण सबसे अधिक पूज्य और प्रधान है, इसलिए शास्त्रों में उसे सबसे पहले कहा गया है। उसके पश्चात् दर्शनगुण को कहा गया है, और उसके बाद सम्यक्त्वगुण आता है। वीर्य (आत्म-शक्ति) जीव और अजीव दोनों में पाया जाता है, इसलिए उसे सबसे अंत में कहा गया है। इसी क्रम से इनके आवरण करने वाले कर्मों का क्रम भी जानना चाहिए।
- **English:** Among all the attributes of the soul, knowledge is the most sublime and venerated; hence, it is systematically enumerated first. It is followed by perception, and then comes right belief. Energy (*Virya*) is common to both animate and inanimate substances, and is thus listed last. The sequential order of the corresponding obscuring karmas follows this exact scriptural arrangement.

Verse 17 (गाथा १७)

- **Prakrit:** घादीवि अघादिं वा णिस्सेसं घादणे असकादो । णामतियणिमित्तादो विग्घं पडिदं अघादिचरिमम्हि ॥ १७ ॥
- **Pure Hindi:** अन्तराय कर्म यद्यपि घाति कर्म है, तथापि वह अन्य घाति कर्मों की तरह जीव के गुणों का पूर्ण रूप से घात करने में असमर्थ है, बल्कि वह अघाति कर्मों की तरह कार्य करता है। साथ ही, यह नाम, गोत्र और वेदनीय इन तीन कर्मों के उदय के निमित्त से अपना कार्य प्रकट करता है, इसीलिए इसे अघाति कर्मों के अंत में पढ़ा गया है।
- **English:** Although the obstructing karma (*Antaraya*) is functionally a destructive karma, it is incapable of completely annihilating the soul's attributes in the manner of other destructive karmas, operating instead with partial restraint like non-destructive karmas. Furthermore, its manifestation depends on the operational presence of body-making, status, and feeling karmas; therefore, it is placed at the very end of the non-destructive sequence.

Verse 18 (गाथा १८)

- **Prakrit:** आउवलेण अवद्विदि भवस्स इदि णाममाउपुव्वं तु । भवमस्सिय णीचुच्चं इदि गोदं णामपुव्वं तु ॥ १८ ॥
- **Pure Hindi:** आयुकर्म के बल और सहायता से ही नामकर्म द्वारा रचे गए चार गतियों के शरीर की स्थिति संभव होती है, इसलिए आयुकर्म को पहले कहकर नामकर्म को उसके बाद कहा गया है। इसी प्रकार, शरीर की प्राप्ति के आधार पर ही समाज में नीच और उच्च कुल का व्यवहार (गोत्र) निश्चित होता है, इसलिए नामकर्म को गोत्रकर्म के पहले पढ़ा गया है।
- **English:** It is strictly by the foundational force of the life-span karma that the physical stability of the bodies constructed by the body-making karma becomes possible; hence, life-span karma is detailed prior to body-making karma. Similarly, it is on the basis of obtaining a specific physical body that worldly distinctions of high and low status are established; therefore, body-making karma is enumerated before status karma.

Verse 19 (गाथा १९)

- **Prakrit:** घादिंव वेयणीयं मोहस्स वलेण घाददे जीवं । इदि घादीणं मज्झे मोहस्सादिम्हि पढिदं तु ॥ १९ ॥
- **Pure Hindi:** वेदनीय कर्म यद्यपि अघाति कर्म है, तथापि वह मोहनीय कर्म के भेद रूप राग और द्वेष के उदय के बल से ही जीव के आत्मिक गुणों का घात करता है (जीव को व्याकुल करता है)। घाति कर्मों की तरह कार्य करने के कारण ही इसे घाति कर्मों के मध्य में और मोहनीय कर्म के ठीक पहले पढ़ा गया है।
- **English:** Though the feeling-producing karma is inherently non-destructive, it acts like a destructive karma by disturbing the soul's composure through the operational strength of attachment and aversion (sub-types of deluding karma). Because it functions with this destructive intensity, it is systematically inserted in the midst of the destructive karmas, positioned directly before the deluding karma.

Verse 20 (गाथा २०)

- **Prakrit:** णाणस्स दंसणस्स य आवरणं वेयणीयमोहणियं । आउगणामं गोदंतरायमिदि पढिदमिदि सिद्धं ॥ २० ॥
- **Pure Hindi:** इस प्रकार तर्क और युक्ति के आधार पर यह सिद्ध होता है कि—ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय—यह जो आठ कर्मों का मूल पाठ-क्रम शास्त्रों में कहा गया है, वह पूर्णतः यथार्थ और वैज्ञानिक है।
- **English:** Thus, through logical deduction and scriptural consistency, the foundational sequential order established for the eight primary karmas—Knowledge-obscuring, Perception-obscuring, Feeling-producing, Deluding, Life-span, Body-making, Status-determining, and Obstructing—is proved to be perfectly precise and structurally sound.

Verse 21 (गाथा २१)

- **Prakrit:** पडपडिहारसिमज्जाहलिचित्तकुलालभंडयारीणं । जह एदेसिं भावा तहवि य कम्मा सुणेयव्वा ॥ २१ ॥
- **Pure Hindi:** (१) देव-प्रतिमा के मुख पर ढका हुआ वस्त्र, (२) राजद्वार पर खड़ा प्रतिहार (द्वारपाल), (३) शहद लिपटी तलवार की धार, (४) मदिरा (शराब), (५) लकड़ी का बंदी-यंत्र (खोड़ा), (६) चित्रकार (चतेरा), (७) कुम्हार, और (८) खजानची (भंडारी)—इन आठों के जैसे अपने-अपने कार्य करने के स्वभाव होते हैं, वैसे ही क्रमशः आठों मूल कर्मों के स्वभाव जानने चाहिए।

- **English:** The operational nature of the eight primary karmas should be understood through the exact analogies of: (1) a veil covering the face of a deity, (2) a doorkeeper guarding a palace gate, (3) a sword-blade smeared with honey, (4) intoxicating liquor, (5) a wooden penal shackle, (6) a painter, (7) a potter, and (8) a royal treasurer, respectively.

Verse 22 (गाथा २२)

- **Prakrit:** पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण तेणउदी । तेउत्तरं सयं वा दुगपणगं उत्तरा होंति ॥ २२ ॥
- **Pure Hindi:** ज्ञानावरण आदि आठ मूल कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ (विशेष भेद) क्रमशः इस प्रकार हैं—ज्ञानावरण के ५, दर्शनावरण के ९, वेदनीय के २, मोहनीय के २८, आयु के ४, नामकर्म के ९३ (अथवा पिंड प्रकृतियों के भेद मिलाने से १०३), गोत्र के २ और अन्तराय के ५ भेद होते हैं।
- **English:** The secondary sub-types (*Uttara-prakritis*) of the eight primary karmas are numerically distributed as follows: Knowledge-obscuring has 5; Perception-obscuring has 9; Feeling-producing has 2; Deluding has 28; Life-span has 4; Body-making has 93 (or 103 when including dynamic structural variations); Status-determining has 2; and Obstructing has 5.

Verse 23 (गाथा २३)

- **Prakrit:** थीणुदयेणुट्ठविदे सोवदि कम्मं करेदि जप्पदि य । णिद्दाणिहुदयेण य ण दिहिमुग्घादितुं सक्को ॥ २३ ॥
- **Pure Hindi:** स्त्यानगृद्धि (तीव्र निद्रा) दर्शनावरण कर्म के उदय से यह जीव गहरी नींद में ही उठ बैठता है, अनेक कठिन शारीरिक कार्य कर डालता है और बोलता भी है, परंतु जागने पर उसे कुछ याद नहीं रहता। और निद्रानिद्रा कर्म के उदय होने पर जीव को अत्यधिक भारी नींद आती है, जिससे बार-बार जगाने पर भी वह अपनी आँखें खोलने में समर्थ नहीं होता।
- **English:** Under the influence of the somnambulistic sleep-obscuring karma (*Styanagriddhi*), a living being performs intensive physical actions and speaks while remaining sound asleep, possessing no recollection upon waking. Under the influence of deep-sleep-obscuring karma (*Nidranidra*), the being suffers such intense torpor that despite repeated attempts to awaken him, he is utterly unable to open his eyes.

Verse 24 (गाथा २४)

- **Prakrit:** पयलापयलुदयेण य वहेदि लाला चलंति अंगाई । णिहुदये गच्छंतो ठाइ पुणो वइसइ पडेइ ॥ २४ ॥
- **Pure Hindi:** प्रचलाप्रचला कर्म के उदय होने से जीव को सोते समय मुख से लार बहने लगती है और उसके हाथ-पैर आदि अंग अनियंत्रित होकर हिलने-चलने लगते हैं। और केवल निद्रा कर्म के उदय से जीव चलते-चलते अचानक रुक जाता है, उठते-बैठते या खड़े-खड़े ही सो जाता है और कभी-कभी नीचे गिर भी पड़ता है।
- **English:** Due to the operation of the agitated-sleep-obscuring karma (*Pracalapracala*), a sleeping being salivates involuntarily while his limbs twitch and move restlessly. Due to the operation of ordinary sleep-obscuring karma (*Nidra*), a person falls asleep while walking, standing, or sitting, and occasionally collapses to the ground.

Verse 25 (गाथा २५)

- **Prakrit:** पयलुदयेण य जीवो ईसुम्मीलिय सुवेइ सुत्तोवि । ईसं ईसं जाणदि मुहुं मुहुं सोवदे मंदं ॥ २५ ॥

- **Pure Hindi:** प्रचला (अल्प निद्रा) कर्म के उदय से यह जीव अपनी आँखें थोड़ी सी खुली रखकर (आधे खुले नेत्रों से) सोता है, और सोते हुए भी अपने आस-पास के वातावरण को थोड़ा-थोड़ा जानता है तथा बार-बार हल्की नींद लेता है। यह निद्रा कुत्ते की नींद के समान अत्यंत हल्की होती है।
- **English:** Under the operation of the light-sleep-obscuring karma (*Pracala*), a living being sleeps with slightly half-open eyes, retains a faint awareness of his immediate surroundings while asleep, and drifts in and out of a very light slumber, much like the light, highly sensitive sleep of a dog.

Verse 26 (गाथा २६)

Prakrit: जंतेण कोद्दवं वा पढमुवसमसम्ममभावजंतेण । मिच्छं दव्वं तु तिधा असंखगुणहीणदव्वकमा ॥ २६ ॥ **Sanskrit Chaya:**यन्त्रेण कोद्रवं वा प्रथमोपशमसम्यक्त्वभावयन्त्रेण । मिथ्यात्वं द्रव्यं तु त्रिधा असंख्यगुणहीनद्रव्यक्रमात् ॥ २६ ॥

- **Pure Hindi Translation:** जैसे चक्की (यंत्र) से दले हुए कोदों (अनाज) भूसी, चावल और कण—इन तीन रूपों में परिणत हो जाते हैं, वैसे ही प्रथमोपशम सम्यक्त्व रूपी यंत्र के द्वारा मिथ्यात्व रूपी कर्म द्रव्य क्रमशः असंख्यात गुना कम होते हुए तीन प्रकार (मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्व प्रकृति) का हो जाता है।
- **English Translation:** Just as Kodrava grain milled in a grinding wheel separates into three parts (husk, rice, and bran), the material karma of wrong belief (*Mithyatva*) is divided into three distinct sub-types (*Mithyatva*, *Samyagmithyatva*, and *Samyaktva-prakriti*) with exponentially decreasing particle masses, when processed through the spiritual grinding wheel of first-subsidential right belief (*Prathamopashama Samyaktva*).

Verse 27 (गाथा २७)

Prakrit: तेजाकम्मेहिं तिए तेजा कम्मेण कम्मणा कम्मं । कयसंजोगे चदुचदुचदुदुग एकं च पयडीओ ॥ २७ ॥ **Sanskrit Chaya:**तैजसकार्मणाभ्यां त्रये तैजसं कार्मणेन कार्मणेन कार्मणं । कृतसंयोगे चतुश्चतुश्चतुर्द्विकमेकं च प्रकृतयः ॥ २७ ॥

- **Pure Hindi Translation:** तैजस और कार्मण शरीर के साथ औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीर का संयोग करने पर चार, चार और चार (१२) भेद होते हैं। तैजस के साथ कार्मण का संयोग होने पर दो, और कार्मण के साथ कार्मण का संयोग होने पर एक भेद होता है, इस प्रकार कुल पंद्रह संयोगी प्रकृतियां होती हैं।
- **English Translation:** By combining the Audarika, Vaikriyika, and Aharaka bodies with the Taijasa and Karmana bodies, combinations of four, four, and four (12) are formed. Combining Taijasa with Karmana yields two, and Karmana with itself yields one. Thus, fifteen combinatorial body-making karmic subtypes (*Prakritis*) are formed.

Verse 28 (गाथा २८)

Prakrit: णलया बाहू य तहा णियंवपुट्टी उरो य सीसो य । अहेव दु अंगाई देहे सेसा उवंगाई ॥ २८ ॥ **Sanskrit Chaya:** नलकौ बाहू च तथा नितम्बपृष्ठे उरश्च शीर्ष च । अष्टैव तु अङ्गानि देहे शेषाणि उपाङ्गानि ॥ २८ ॥

- **Pure Hindi Translation:** शरीर में दो पैर, दो हाथ, नितंब (कमर के पीछे का भाग), पीठ, हृदय (छाती) और मस्तक—ये आठ मूल 'अंग' कहलाते हैं। इनके अतिरिक्त आँख, कान आदि बाकी सभी अवयव 'उपांग' कहलाते हैं।
- **English Translation:** In the physical body, the two legs, two arms, buttocks, back, chest, and head—these eight constitute the primary limbs (*Angas*). All other remaining body parts, such as eyes and ears, are termed secondary appendages (*Upangas*).

Verse 29 (गाथा २९)

Prakrit: सेवट्टेण य गम्मइ आदीदो चदुसु कप्पजुगलोत्ति । तत्तो दुजुगलजुगले खीलियणारायणद्धोत्ति ॥ २९ ॥ **Sanskrit Chaya:**सृपाटिकाद्येन च गम्यते आदितः चतुर्षु कल्पयुगल इति । ततः द्वियुगलयुगले कीलितनाराचार्द्ध इति ॥ २९ ॥

- **Pure Hindi Translation:** असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन वाले जीव यदि स्वर्ग में उत्पन्न हों, तो प्रारंभ के चार कल्प-युगलों (सौधर्म-ऐशान से लेकर कापिष्ठ तक) में जाते हैं। उसके बाद के दो-दो युगलों में क्रमशः कीलित और अर्द्धनाराच संहनन वाले जीव उत्पन्न होते हैं।
- **English Translation:** Souls possessing the weakest skeletal joint structure (*Asampraptasripatika Sanhanana*), if destined for heaven, are born up to the first four celestial pairs (up to the 8th heaven). Subsequently, in the next successive pairs of heavens, souls possessing the *Kilita* (pinned) and *Ardhanaracha* (half-mortise) skeletal structures are born, respectively.

Verse 30 (गाथा ३०)

Prakrit: णवगेविज्जाणुद्दिसणुत्तरवासीसु जांति ते णियमा । तिदुगेगे संघडणे णारायणमादिगे कमसो ॥ ३० ॥ **Sanskrit Chaya:**नवग्रैवेयिकानुदिशानुत्तरवासिषु यान्ति ते नियमात् । त्रिद्विकैकेन संहननेन नाराचादिकेन क्रमशः ॥ ३० ॥

- **Pure Hindi Translation:** नाराच, वज्रनाराच और वज्रवृषभनाराच—इन तीन संहनन वाले जीव नियम से नौ ग्रैवेयकों में जाते हैं। इनमें से अंतिम दो संहनन वाले नौ अनुदिशों में, तथा केवल सर्वश्रेष्ठ (वज्रवृषभनाराच) संहनन वाले जीव पाँच अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होते हैं।
- **English Translation:** Souls with the top three skeletal structures (*Naracha*, *Vajranaracha*, and *Vajravrishabhanaracha*) systematically ascend to the nine *Graiveyaka* heavens. Those with the top two structures reach the nine *Anudisha* heavens, and those with only the supreme, strongest skeletal structure (*Vajravrishabhanaracha*) are born in the five *Anuttara* celestial realms.

Verse 31 (गाथा ३१)

Prakrit: सण्णी छस्संहडणो वज्जदि मेघं तदो परं चापि । सेवट्टादीरहिदो पण पणचदुरेगसंहडणो ॥ ३१ ॥ **Sanskrit Chaya:** संज्ञी षट्संहननो व्रजति मेघां ततः परं चापि । सृपाटादिरहितः पञ्चमीं पञ्चचतुरेकसंहननः ॥ ३१ ॥

- **Pure Hindi Translation:** छहों संहनन वाले संज्ञी जीव नरक में तीसरी 'मेघा' नामक पृथ्वी तक जाते हैं। असम्प्राप्तासृपाटिका से रहित पाँच संहनन वाले पाँचवीं पृथ्वी तक, चार संहनन वाले छठी पृथ्वी तक और केवल प्रथम संहनन वाला जीव सातवीं पृथ्वी तक जाता है।

- **English Translation:** Rational (*Sanjni*) beings possessing any of the six skeletal structures can descend up to the third hell (*Megha*). Those with the top five structures (excluding the weakest) can descend to the fifth hell, those with the top four structures to the sixth hell, and only those with the strongest skeletal structure can descend to the seventh hell.

Verse 32 (गाथा ३२)

Prakrit: अंतिमतियसंहडणस्सुदओ पुण कम्मभूमिमहिलाणं । आदिमतिगसंहडणं णत्थित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ॥ ३२ ॥ **Sanskrit Chaya:** अन्तिमत्रयसंहननस्योदयः पुनः कर्मभूमिमहिलानाम् । आदिमत्रिकसंहननं नास्तीतिजिनैर्निर्दिष्टम् ॥ ३२ ॥

- **Pure Hindi Translation:** कर्मभूमि की महिलाओं (स्त्रियों) में केवल अंतिम तीन संहननों (अर्द्धनाराच, कीलित और असम्प्राप्तासृपाटिका) का ही उदय होता है। जिनेन्द्र देव ने स्पष्ट कहा है कि स्त्रियों के प्रथम तीन (वज्रवृषभनाराच आदि) उत्तम संहनन नहीं होते।
- **English Translation:** For the women of the karma-bhumis (lands of action), only the manifestation of the lowest three skeletal structures occurs. The Jinas have specified that females do not possess the top three supreme skeletal structures.

Verse 33 (गाथा ३३)

Prakrit: मूलुण्हपहा अग्गी आदावो होदि उण्हसहियपहा । आइच्चे तेरिच्छे उण्हूणपहा हु उज्जोओ ॥ ३३ ॥ **Sanskrit Chaya:**मूलोष्णप्रभा अग्निः आतापो भवति उष्णसहितप्रभा । आदित्ये तिरश्चि उष्णोनप्रभा हि उद्योतः ॥ ३३ ॥

- **Pure Hindi Translation:** अग्नि मूल रूप से उष्ण (गर्म) प्रभा वाली होती है। जिसकी केवल प्रभा उष्ण हो, उसे 'आतप' नामकर्म कहते हैं, जो सूर्य-विमान में रहने वाले तिर्यंचों में होता है। और जो उष्णता से रहित शीतल प्रभा है, वह 'उद्योत' है।
- **English Translation:** Fire has a fundamentally hot radiance. Radiance that projects heat without the source itself burning is termed *Atapa* (radiant heat karma), which exists in the sub-human beings residing in the solar orb. Conversely, cool, heatless radiance is termed *Udyota* (cool light karma).

Verse 34 (गाथा ३४)

Prakrit: देहे अविणाभावी बंधणसंघाद इदि अबंधुदया । वण्णचउक्केऽभिण्णे गहिदे चत्तारि बंधुदये ॥ ३४ ॥ **Sanskrit Chaya:**देहे अविनाभाविनौ बन्धनसंघातौ इति अबन्धोदयौ । वर्णचतुष्केऽभिन्ने ग्रहीते चतस्रः बन्धोदययोः ॥ ३४ ॥

- **Pure Hindi Translation:** शरीर नामकर्म के साथ 'बंधन' और 'संघात' नामकर्मों का अविनाभावी (अनिवार्य) संबंध है, इसलिए वे बंध और उदय में अलग से नहीं गिने जाते। इसी प्रकार वर्ण-चतुष्क (वर्ण, गंध, रस, स्पर्श) को अभेद रूप से ग्रहण करने पर बंध और उदय में उनके केवल चार भेद ही गिने जाते हैं।
- **English Translation:** The *Bandhana* (binding) and *Sanghata* (integration) karmas have an inseparable relationship with the body-making karma, so they are not counted separately during binding and manifestation states. Similarly, when the tetra-group of color, odor, taste, and touch is considered non-differentially, only four primary types are counted in binding and manifestation states.

Verse 35 (गाथा ३५)

Prakrit: पंच णव दोण्णि छब्बीसमवि य चउरो कमेण सत्तट्ठी । दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ बंधपयडीओ ॥ ३५ ॥ **Sanskrit Chaya:** पञ्च नव द्वौ षड्विंशतिरपि च चतस्रः क्रमेण सप्तषष्टिः । द्वौ च पञ्च च भणिता एता बन्धप्रकृतयः ॥ ३५ ॥

- **Pure Hindi Translation:** (बंध के योग्य प्रकृतियाँ:) ज्ञानावरण की ५, दर्शनावरण की ९, वेदनीय की २, मोहनीय की २६, आयु की ४, नामकर्म की ६७, गोत्र की २ और अन्तराय की ५—ये सभी कुल मिलाकर (१२०) बंध योग्य प्रकृतियाँ कही गई हैं।
- **English Translation:** The subtypes capable of being bound are numerically specified sequentially as follows: Knowledge-obscuring 5, Perception-obscuring 9, Feeling-producing 2, Deluding 26, Life-span 4, Body-making 67, Status 2, and Obstructing 5. These constitute the total (120) bindable karma subtypes.

Verse 36 (गाथा ३६)

Prakrit: पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण सत्तट्ठी । दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ उदयपयडीओ ॥ ३६ ॥ **Sanskrit Chaya:** पञ्च नव द्वौ अष्टाविंशतिः चतस्रः क्रमेण सप्तषष्टिः । द्वौ च पञ्च च भणिता एता उदयप्रकृतयः ॥ ३६ ॥

- **Pure Hindi Translation:** (उदय के योग्य प्रकृतियाँ:) ज्ञानावरण की ५, दर्शनावरण की ९, वेदनीय की २, मोहनीय की २८, आयु की ४, नामकर्म की ६७, गोत्र की २ और अन्तराय की ५—ये सभी कुल मिलाकर (१२२) उदय योग्य प्रकृतियाँ कही गई हैं।
- **English Translation:** The subtypes capable of manifesting (coming into fruition) are sequentially specified as: Knowledge-obscuring 5, Perception-obscuring 9, Feeling-producing 2, Deluding 28, Life-span 4, Body-making 67, Status 2, and Obstructing 5. These constitute the total (122) manifestable karma subtypes.

Verse 37 (गाथा ३७)

Prakrit: भेदे छादालसयं इदरे बंधे हवंति वीससयं । भेदे सव्वे उदये बावीससयं अभेदम्हि ॥ ३७ ॥ **Sanskrit Chaya:** भेदे षट्चत्वारिंशच्छतमितरे बन्धे भवन्ति विंशशतम् । भेदे सर्वे उदये द्वाविंशशतमभेदे ॥ ३७ ॥

- **Pure Hindi Translation:** भेद की विवक्षा (अपेक्षा) से बंध में १४६ प्रकृतियाँ होती हैं, और अभेद विवक्षा से बंध में १२० प्रकृतियाँ होती हैं। इसी प्रकार भेद की विवक्षा से उदय में सभी १४८ प्रकृतियाँ होती हैं, और अभेद विवक्षा से १२२ प्रकृतियाँ होती हैं।
- **English Translation:** From an analytical (differentiated) perspective, there are 146 bindable subtypes, whereas from a synthetic (undifferentiated) perspective, there are exactly 120 bindable subtypes. Similarly, analytically, all 148 subtypes can manifest, but synthetically, there are 122 manifestable subtypes.

Verse 38 (गाथा ३८)

Prakrit: पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण तेणउदी । दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ सत्तपयडीओ ॥ ३८ ॥ **Sanskrit Chaya:** पञ्च नव द्वौ अष्टाविंशतिः चत्वारः क्रमेण त्रिनवतिः । द्वौ च पञ्च च भणिता एताः सत्त्वप्रकृतयः ॥ ३८ ॥

- **Pure Hindi Translation:** (सत्ता के योग्य प्रकृतियाँ:) ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ९, वेदनीय २, मोहनीय २८, आयु ४, नामकर्म ९३, गोत्र २ और अन्तराय ५—ये सभी कुल १४८ सत्तारूप प्रकृतियाँ कही गई हैं।
- **English Translation:** The subtypes capable of existing in a dormant state (*Sattva*) are sequentially: Knowledge-obscuring 5, Perception-obscuring 9, Feeling-producing 2, Deluding 28, Life-span 4, Body-making 93, Status 2, and Obstructing 5. Together, these constitute the complete 148 existent karma subtypes.

Verse 39 (गाथा ३९)

Prakrit: केवलणाणावरणं दंसणछक्कं कसायवारसयं । मिच्छं च सव्वघादी सम्मामिच्छे अबंधति ॥ ३९ ॥ **Sanskrit Chaya:**केवलज्ञानावरणं दर्शनषट्कं कषायद्वादशकम् । मिथ्यात्वं च सर्वघातीनि सम्यग्मिथ्यात्वमबन्धे ॥ ३९ ॥

- **Pure Hindi Translation:** केवलज्ञानावरण (१), दर्शनावरण की छह प्रकृतियाँ (केवलदर्शनावरण और ५ निद्रा), बारह कषायें, और मिथ्यात्व—ये २० प्रकृतियाँ 'सर्वघाती' (गुणों का पूर्ण नाश करने वाली) हैं। तथा सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति भी अबंध अवस्था में सर्वघाती ही है।
- **English Translation:** Omniscience-obscuring (1), the six perception-obscuring karmas, the twelve heavy passions, and the wrong-belief karma (*Mithyatva*)—these 20 subtypes are completely-destructive (*Sarvaghati*). Furthermore, the mixed-belief karma (*Samyagmithyatva*) is also completely-destructive in states where it is not being newly bound.

Verse 40 (गाथा ४०)

Prakrit: णाणावरणचउक्कं तिदंसणं सम्मगं च संजलणं । णव णोकसाय विग्घं छब्बीसा देसघादीओ ॥ ४० ॥ **Sanskrit Chaya:**ज्ञानावरणचतुष्कं त्रिदर्शनं सम्यक्त्वं च संज्वलनम् । नव नोकषाया विघ्नं षड्विंशतिः देशघातीनि ॥ ४० ॥

- **Pure Hindi Translation:** ज्ञानावरण की प्रारंभिक चार प्रकृतियाँ, दर्शनावरण की तीन प्रकृतियाँ (चक्षु, अचक्षु, अवधि), सम्यक्त्व प्रकृति, संज्वलन की चार कषायें, नौ नोकषायें (हास्य आदि) और अन्तराय की पाँच प्रकृतियाँ—ये कुल २६ प्रकृतियाँ 'देशघाती' (गुणों का आंशिक घात करने वाली) हैं।
- **English Translation:** The first four knowledge-obscuring karmas, three perception-obscuring karmas, right-belief karma, the four gleaming passions (*Sanjvalana*), the nine quasi-passions, and the five obstructing karmas—these 26 subtypes are partially-destructive (*Deshaghati*).

Verse 41 & 42 (Yugma/युग्म - गाथा ४१-४२)

Prakrit: सादं तिण्णेवाऊ उच्चं णरसुरदुगं च पंचिंदी । देहा बंधणसंघादंगोवंगाई वण्णचओ ॥ ४१ ॥ समचउरवज्जरिसहं उवघादूणगुरुछक्क सग्गमणं । तसवारसट्टसट्ठी वादालमभेददो सत्था ॥ ४२ ॥ जुम्मं । **Sanskrit Chaya:** सातं त्रीण्येवायूषि उच्चं नरसुरद्विकं च पञ्चेन्द्रियम् । देहा बन्धनसंघाताङ्गोपाङ्गानि वर्णचतुष्कम् ॥ ४१ ॥ समचतुरस्रवज्रर्षभमुपघातोनागुरुषट्कं सद्गमनम् । त्रसद्वादशाष्टषष्टिः द्वाचत्वारिंशद्भेदतः शस्ताः ॥ ४२ ॥ युग्मम् ।

- **Pure Hindi Translation:** साता वेदनीय, तीन आयु (नरकायु को छोड़कर), उच्च गोत्र, मनुष्य-द्विक, देव-द्विक, पंचेन्द्रिय जाति, पाँच शरीर, पाँच बंधन, पाँच संघात, तीन आंगोपांग, शुभ वर्ण-चतुष्क,

समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, उपघात रहित अगुरुलघु आदि छह, प्रशस्त विहायोगति और त्रस आदि बारह—ये भेद रूप से ६८ और अभेद रूप से ४२ 'प्रशस्त' (पुण्य) प्रकृतियाँ हैं।

- **English Translation:** Pleasant-feeling karma, three life-spans (excluding hell), high status, human dyad, celestial dyad, five-sensed class, five bodies, five bindings, five integrations, three appendages, auspicious color-tetrad, perfectly symmetrical structure, supreme adamantine skeletal joint, the six starting with light-heavy (excluding self-destructive), auspicious gait, and the twelve starting with mobile beings—these constitute the 68 differentiated (or 42 undifferentiated) auspicious (*Shasta* / meritorious) karma subtypes.

Verse 43 & 44 (Yugma/युग्म - गाथा ४३-४४)

Prakrit: घादी णीचमसादं णिरयाऊ णिरयतिरियदुग जादी- संठाणसंहदीणं चदुपणपणगं च वण्णचओ ॥ ४३ ॥ उवघादमसग्गमणं थावरदसयं च अप्पसत्था हु । बंधुदयं पडि भेदे अडणउदि सयं दुचदुरसीदिदरे ॥ ४४ ॥ जुम्मं । **Sanskrit Chaya:** घातीनि नीचमसातं निरयायुः निरयतिर्यग्द्विकं जाति- संस्थानसंहतीनां चतुःपञ्चपञ्चकं च वर्णचतुष्कम् ॥ ४३ ॥ उपघातमसद्गमनं स्थावरदशकं च अप्रशस्ता हि । बन्धोदयं प्रति भेदे अष्टनवतिः शतं द्वि-चतुरशीतिरितरे ॥ ४४ ॥ युग्मम् ।

- **Pure Hindi Translation:** चारों घाति कर्मों की ४७ प्रकृतियाँ, नीच गोत्र, असाता वेदनीय, नरकायु, नरक-द्विक, तिर्यंच-द्विक, एकेन्द्रिय आदि चार जातियाँ, प्रथम को छोड़कर पाँच संस्थान, प्रथम को छोड़कर पाँच संहनन, अशुभ वर्ण-चतुष्क, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति और स्थावर आदि दस—ये सभी 'अप्रशस्त' (पाप) प्रकृतियाँ हैं। ये भेद विवक्षा से बंध में ९८ और उदय में १०० हैं, तथा अभेद विवक्षा से बंध में ८२ और उदय में ८४ हैं।
- **English Translation:** The 47 destructive karmas, low status, unpleasant-feeling, hellish life-span, hellish dyad, sub-human dyad, four lower sensory classes, five lower physical structures, five lower skeletal joints, inauspicious color-tetrad, self-destructive karma, inauspicious gait, and the ten immobile-related karmas—these are all inauspicious (*Aprashasta* / demeritorious) subtypes. Differentiated, there are 98 in binding and 100 in manifestation; undifferentiated, there are 82 in binding and 84 in manifestation.

Verse 45 (गाथा ४५)

Prakrit: पढमादिया कसाया सम्मत्तं देससयलचारित्तं । जहखादं घादंति य गुणणामा होंति सेसावि ॥ ४५ ॥ **Sanskrit Chaya:**प्रथमादिकाः कषायाः सम्यक्त्वं देशसकलचारित्रम् । यथाख्यातं घातयन्ति च गुणनामानो भवन्ति शेषा अपि ॥ ४५ ॥

- **Pure Hindi Translation:** अनंतानुबंधी आदि प्रथम चार कषायें क्रमशः सम्यक्त्व का, अप्रत्याख्यानावरण कषाय देश-चारित्र का, प्रत्याख्यानावरण कषाय सकल-चारित्र का और संज्वलन कषाय यथाख्यात-चारित्र का घात करती हैं। शेष प्रकृतियाँ भी अपने गुणों (कार्य) के अनुसार ही सार्थक नाम वाली होती हैं।
- **English Translation:** The four tiers of passions, starting with the infinite-binding (*Anantanubandhi*), sequentially destroy right belief, partial conduct, complete conduct, and perfect (passionless) conduct. The remaining karmic subtypes also bear names that reflect their functional qualities and effects.

Verse 46 (गाथा ४६)

Prakrit: अंतोमुहुत्त पक्खं छम्मासं संखऽसंखणंतभवं । संजलणमादियाणं वासणकालो दु णियमेण ॥ ४६ ॥ **Sanskrit Chaya:**अन्तर्मुहूर्तः पक्षः षण्मासाः संख्यासंख्यानन्तभवाः । संज्वलनाद्यानां वासनाकालः तु नियमेन ॥ ४६॥

- **Pure Hindi Translation:** संज्वलन, प्रत्याख्यानावरण, अप्रत्याख्यानावरण और अनंतानुबंधी—इन चारों कषायों की वासना (संस्कार) का काल नियम से क्रमशः अंतर्मुहूर्त, एक पक्ष (पंद्रह दिन), छह मास, और संख्यात/असंख्यात/अनंत भव (जन्म) प्रमाण होता है।
- **English Translation:** The residual impression (duration of influence) for the four passions—gleaming (*Sanjvalana*), totally-obstructing (*Pratyakhyanavarana*), partially-obstructing (*Apratyakhyanavarana*), and infinite-binding (*Anantanubandhi*)—is strictly and sequentially mandated as an *Antarmuhurta* (less than 48 minutes), a fortnight, six months, and numerable/innumerable/infinite lifetimes.

Verse 47 (गाथा ४७)

Prakrit: देहादी फासंता पण्णासा णिमिणदावजुगलं च । थिरसुहपत्तेयदुगं अगुरुतियं पोग्गलविवाई ॥ ४७ ॥ **Sanskrit Chaya:**देहादयः स्पर्शान्ताः पञ्चाशत् निर्माणातापयुगलं च । स्थिरशुभप्रत्येकद्विकमगुरुत्रयं पुद्गलविपाकिन्यः ॥ ४७ ॥

- **Pure Hindi Translation:** पाँच शरीर से लेकर स्पर्श नामकर्म तक की ५० प्रकृतियाँ, निर्माण, आताप-उद्योत का युगल, स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, प्रत्येक-साधारण ये तीन जोड़े (६), और अगुरुलघु आदि तीन—ये कुल ६२ प्रकृतियाँ 'पुद्गल-विपाकी' (पुद्गल में फल देने वाली) हैं।
- **English Translation:** The 50 subtypes from the five bodies up to the touch karma, plus formation (*Nirmana*), the pair of radiant-heat and cool-light, the three pairs of stable/unstable, auspicious/inauspicious, individual/common body (6), and the triad beginning with light-heavy—these total 62 subtypes are 'Matter-maturing' (*Pudgala-vipaki*), yielding their fruits strictly within the physical body.

Verse 48 (गाथा ४८)

Prakrit: आऊणि भवविवाई खेत्तविवाई य आणुपुव्वीओ । अट्ठत्तरि अवसेसा जीवविवाई मुणेयव्वा ॥ ४८ ॥ **Sanskrit Chaya:**आयूंषि भवविपाकीनि क्षेत्रविपाकीनि च आनुपूर्वाणि । अष्टसप्ततिरवशिष्टा जीवविपाकिन्यः मन्तव्याः ॥ ४८ ॥

- **Pure Hindi Translation:** नरकादि चारों आयु 'भव-विपाकी' (जन्म/भव में फल देने वाली) प्रकृतियाँ हैं। चारों आनुपूर्वी प्रकृतियाँ 'क्षेत्र-विपाकी' (विग्रह गति के क्षेत्र में फल देने वाली) हैं। इनके अतिरिक्त शेष बची हुई अठहत्तर (७८) प्रकृतियाँ 'जीव-विपाकी' (सीधे जीव में फल देने वाली) जाननी चाहिए।
- **English Translation:** The four life-span karmas are 'State-maturing' (*Bhava-vipaki*), yielding fruits as specific states of existence. The four directional-transition karmas (*Anupurvi*) are 'Space-maturing' (*Kshetra-vipaki*), operating in the spatial transit between lives. The remaining 78 subtypes must be understood as 'Soul-maturing' (*Jiva-vipaki*), yielding their direct fruits upon the soul itself.

Verse 49 (गाथा ४९)

Prakrit: वेदणियगोदघादीणेकावण्णं तु णामपयडीणं । सत्तावीसं चेदे अट्ठत्तरि जीवविवाई (ओ) ॥ ४९ ॥ **Sanskrit Chaya:**वेदनीयगोत्रघातिनामेकपञ्चाशन्तु नामप्रकृतीनाम् । सप्तविंशतिश्चैता अष्टसप्ततिः जीवविपाकिन्यः ॥ ४९ ॥

- **Pure Hindi Translation:** वेदनीय की २, गोत्र की २ और घाति कर्मों की ४७—ये कुल ५१ प्रकृतियाँ तथा नामकर्म की २७ प्रकृतियाँ; ये सभी मिलकर (५१+२७ = ७८) अठहत्तर प्रकृतियाँ जीव-विपाकी होती हैं।
- **English Translation:** The 2 Feeling-producing, 2 Status-determining, and 47 Destructive karmas—totaling 51—along with 27 specific Body-making karmas; combined together, these 78 subtypes constitute the Soul-maturing (*Jiva-vipaki*) karmas.

Verse 50 (गाथा ५०)

Prakrit: तित्थयरं उस्सासं बादरपज्जत्तसुस्सरादेज्जं । जसतसविहायसुभगदु चउगइ पणजाइ सगवीसं ॥ ५० ॥ **Sanskrit Chaya:**तीर्थंकरमुच्छ्वासं बादरपर्याप्तसुस्वरादेयम् । यशस्त्रसविहायस्सुभगद्वयं चतुर्गतयः पञ्चजातयः सप्तविंशतिः ॥ ५० ॥

- **Pure Hindi Translation:** तीर्थंकर प्रकृति, उच्छ्वास, बादर-सूक्ष्म (२), पर्याप्त-अपर्याप्त (२), सुस्वर-दुःस्वर (२), आदेय-अनादेय (२), यश-अपयश (२), त्रस-स्थावर (२), प्रशस्त-अमशस्त विहायोगति (२), सुभग-दुर्भग (२), चार गतियाँ (४) और पाँच जातियाँ (५)—ये २७ नामकर्म की प्रकृतियाँ जीव-विपाकी हैं।
- **English Translation:** The 27 Body-making karmas that are soul-maturing include: Tirthankara, Respiration, the dyads of gross/subtle, complete/incomplete, sweet/harsh voice, impressive/non-impressive appearance, fame/infamy, mobile/immobile, auspicious/inauspicious gait, amiable/unamiable, along with the four realms of existence (4) and the five sensory classes (5).